सेवारत महिलाओं की सामाजिक स्थिति

डॉ. अलका शर्मा
प्रवक्ता समाज"ाास्त्र विभाग
साहू राम स्वरूप महिला
महाविद्यालय बरेली

यह निर्विवाद सत्य हैं। कि भारतीय समाज एक जटिल समाज हैं। जिसकी संरचना में विभिन्न धर्म, जाति संस्कृति, भाषायी तत्व विद्यमान हैं। यही विभिन्नताओं वाला सुजला ,सुफला, शस्य श्यामला भारतीय समाज आज क्रांतिकारी परिवर्तन से होकर गुजर रहा हैं। बदलती हुई भारतीय सामाजिक – आर्थिक संरचना एंव परिस्थितियों ने महिलाओं की परम्परागत भूमिकाओं, जीवन शैली एंव उनकी स्थिति व समस्याओं में आमूल चूल परिवर्तनों को जन्म दिया हैं। वास्तविकता तो यह है कि स्वातन्त्रोपरान्त भारतवर्ष में समानता और स्वतन्त्रता के द"ान पर आधारित भारतीय संविधान ने स्त्री–पुरूष के बीच के समस्त भेदभावो को समाप्त करके उनको पुरूषों के समकक्ष ला दिया हैं। फलस्वरूप महिलायें आज जीवन के सम्सत अंगों– पारिवारिक, व्यावसायिक, धाार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, विज्ञान ,कला, साहित्य में पुरूषों के साथ कधें से कंधा मिलाकर कार्यरत दिखाई दे रही हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में उनके प्रवे"ा के फलस्वरूप एक ओर वे परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना रही हैं। तो दूसरी ओर उनके व्यवसाय/नौकरी करने से परिवार में अनेकों संरचनात्मक एंव प्रकाय्रात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। ,यद्यपि पारिवारिक व व्यावसायिक जीवन के अन्तर्गत समायोजन या यंघर्ष जैसी समस्यायें भी जन्म ले रही हैं। इन्ही ि"ाक्षित सेवारत महिलाओं में भूमिका संघर्ष एंव समायोजन का समाज"ाास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत शोध में किया गया हैं।

संक्षेप में अध्ययन के उद्दे"यों को इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैं। –(1) सूचनादाताओं की सामाजिक –सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करना, (2) उन प्रेरकों की जानकारी प्राप्त करना जिनके कारण वे कामकाजी होने के लिए अभिप्रेरित हुई हैं। (3)ि"ाक्षित सेवारत महिलाओं की पारिवारिक समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करना, (4)सेवारतों की प्रत्या"ाओं एंव व्यावसायिक गति"ाीलता का अध्ययन करना, (5) सेवारत महिलाओ के परिवार में घरेलू गतिविधियों में पति एंव अन्य सदस्यों के सहयोग की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना, (6)सेवारत महिलाओं द्वारा उनके स्वंय के परिवारों के सामंजस्य_स्थापित करने सम्बन्धी द"ाओं का अध्ययन करना, (7) सेवारत महिलाओं में भूमिका प्रतिबद्धता एंव भूमिका संघर्ष के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना, (8) ि"ाक्षा के प्रसार , शासकीय प्रयासों व अन्य सामाजिक द"ाओं के कारण महिलाओं की प्रस्थिति में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी प्राप्त करना, (9) सेवारत महिलाओं द्वारा पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी की स्थिति की जानकारी प्राप्त करना, (10)सेवारत महिलाओं के सामाजिक –सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी प्राप्त करना।

प्रस्तुत अध्ययन में मुरादाबाद मण्डल के अन्तर्गत बिजनार जनपद में कार्यरत ि"ाक्षिकायें, चिकित्सक, अधिवक्ता व पुलिस विभाग में कार्यरत 320 महिलाओं का समाज"ाास्त्रीय अध्ययन किया गया हैं। महिलाओं का निद"ान विधि से चुनाव किया गया हैं। शोध–समस्या पर तथ्यातमक व वस्तुनिष्ठ सूचनायें संकलित करने के उद्दे"य से अध्ययन क्षेत्र में कुल कार्य"ाील महिलाओं (3200) में सें 10 प्रति"ात अर्थात 320 को चयनित किया गया। प्राथमिक आंकड़ो का संकलन 'साक्षात्कार अनुसूची 'की सहायता से तथा साक्षात्कार प्रविधि की प्रत्यक्ष पूछताछ प्रणाली तथा संघर्ष, पारिवारिक तनाव, सामंजस्य इत्यादि सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी 'असहभागी अवलोकन

प्रविधि' द्वारा की गयी हैं। अभिवृत्तियों, रूचियों, व्यवहार, सन्तुष्टि–असंतुष्टि सहयोग– असहयोग सम्बन्धी दृष्टिकोणों की जानकारी हेतु मनोवृत्तियों मापकों को भी उपयोग में लाया गया हैं। और गुणात्मक तथ्यों को भी प्रचुर मात्रा में संकलित किया गया हैं। जिन कामचाऊ उपकल्पनाओं को परीक्षित किया गया हैं वे है–(1) सेवारत महिलओं की दोहरी भूमिकाओं से उनके परिवारों की आथिक स्थिति सकारात्मक रूप में प्रभावित हुई हैं,(2) सेवारत महिलायें सामाजिक–आथिक क्षेत्र में स्वातन्त्रता चाहती है, (3) महिलाओं का नौकरी में आने का मुख्य कारक आथिक स्वावलम्बन की भावना हैं, (4) सेवारत महिलाओं में पति से समान व सहयोगी व्यवहार की भावना पायी जाती हैं।, (5) सेवारत महिलाओं में गति"ाीलता अधिक पाई जाती हैं, (6) सेवारत महिलाओं में विवाह –विच्छेद की दर, गैर सेवारत महिलाओं की तुलना में अधिक पायी जाती हैं, (7) सेवारत महिलाओं के पारिवारिक जीवन में भूमिका संघर्ष पाया जाता है, (8) सेवारत महिलाओं के सामाजिक –सांस्कृतिक दृष्टिकोण गैर सेवारत महिलाओं की तुलना में प्रगति"ाील होते हैं।

आधुनिकीकरण किसी समाज की भौतिक संस्कृति में ही बदलाव नहीं लाता अपितु सम्पूर्ण रूप में उसके विचार, वि"वास, रूढ़ियों, मूल्यों तथा जीवन शैली को भी प्रभावित करता हैं। फलतः आधुनिकीकरण पिछड़ें हुए समान को परिवर्तित कर विकसित करने की सामाजिक प्रक्रिया हैं, जिससे पद संगठन, संचना, सामाजिक गति"ाीलता तथा विभेदीकरण में परिवर्तन, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण और नयी विचारधाराओं के जन्म होते है इस प्रकार आधुनिकीकरण एंव विकास एक दूसरे की पूरक प्रक्रियायें है ,जिसके अन्तर्गत ऐसे समाज की रचना करना जो जनसहयोग, सहभागिता, समता, सभी के लिए के लिए समान ि"ाक्षा व अफसरों के प्राचीन (परम्परागत) संस्कृति से विचलित होकर रूढ़िवादी संकीर्णता को त्यागकर भौतिकवादी संस्कृति ग्रहण करने के साथ वि"वास, विचार मूल्य और जीवन शैली में बदलाव आता हैं।

महिलाओं प्रायः अर्थोपार्जन तथा व्यक्तिगत अभिरूचि के कारण नौकरी में आ रही हैं। नौकरी के प्रति उन्मेष के अनेक कारणों का उल्लेख किया जा सकता हैं। जैसे व्यक्तिगत अभिरूचि, समाज में उच्च दर्जा पाने की लालसा, घर की आर्थिक स्थिति सुधारने ,ि"ाक्षित होने का लाभ प्राप्त करना आदि। इनमें से यद्यपि प्रत्यके मामले में एकाधिक कारण हो सकते हैं, लेकिन 93 या 38.02 प्रति"ात अर्थात सबसे अधिक महिलाओं ने इसका कारण 'घर की आर्थिक द"ाा सुधारना' बताया। नौकरी करने वाली महिलाओं के साथ पारिवारिक एंव व्यावसायिक स्तरों पर अनेक समस्यायें भी उत्पन्न हो जाती है, जैसे विभागीय तंत्र के साथ सांमजस्य, सहकर्मियों का व्यहार, सेवा से सम्बन्धित लोगों की सन्तुष्टि, आवागमन की असुविधा, गृहस्थी के उत्तरदायित्वों की चिन्ता बनी रहना, थकान तथा तनावग्रस्तता आदि।

सेवारतों की जीवन शैली में विभिन्न प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो जाने से उनका जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है। स्वभावतः ही उनकी गृहणी की भूमिका, व्यवसाय की भूमिका एंव माँ की भूमिका में काफी अं"ाों तक भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं।

नि"िचत रूप से ही भारतीय महिलाओं में सामाजिक चेतना की आज एक नयी लहर देखने को मिलती है। इस सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य एक वि"ोष बात यह है कि पुरूष वर्ग की तुलना मे महिलायें समाज की परम्परा, मूल्य, प्रथायें आदि को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में भी पुरूषों से पीछे नहीं हैं। प्रस्तुत अध्ययन में सांस्कृतिक तत्वों के संरक्षण व हस्तान्तरण म नारी की भूमिका के बारे में ि"ाक्षित सेवारत महिलाओं के दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया। चयनित महिलाओं में बड़ी संख्या अर्थात 209 या 65.31 प्रति"ात महिलाओं ने स्वीकार किया कि वर्तमान समय में पारिवारिक परम्पराओं के विरोध का औचित्य समयानुकूल है यद्यपि 28.44 प्रति"ात महिलाओं पारिवारिक परम्परा के उल्लंघन के प्रति नकारात्मक दृष्टि कोण प्रदि"ात करती है। इसी संदर्भ में 261 या 81.56 प्रति"ात ि"ाक्षित कामकाजी महिलायें परिवार के विघटन को स्पष्ट रूप में स्वीकार करती हैं।

समस्या के समाधान हेतु सुझाव

किसी भी सामाजिक समस्या को हल करने के लिए प्रायः तीन दृष्टिकोणों (बहुकारकीय, पारस्परिक सम्बन्ध तथा सापेक्षिकता) पर दृष्टिपात करना उचित है, क्योंकि किसी भी सामाजिक समस्या के लिए कोई भी एक ही कारक उत्तरदायी नहीं होता अपितु विभिन्न विभिन्न कारक तथा परिस्थितियॉ उत्तरदायी होती हैं। और विभिन्न सामाजिक समस्याओं के एक–दूसरे से परस्पर जुड़ी होने अथवा निर्भरता के कारण समस्या को पृथककरण से सुलझाना अथवा समाधान करना नितान्त असम्भव सा रहता है। सापेक्षिकता की दृष्टि से किसी भी सामाजिक समस्या का स्थान , तीव्रता एंव समय क साथ गहरा सम्बन्ध होता हैं। साथ ही किसी भी समस्या का निराकरण प्रत्यक्ष निरीक्षण तथ्यों के व्यावहारिक वि"लेषण ,सामाजिक किया एंव सामाजिक कार्य द्वारा ही सम्भव हैं। किया के अन्तर्गत यह नि"चय किया जाता है कि सामाजिक समस्या के समाधान के लिए कहाँ सामाजिक क्रिया और कहाँ सामाजिक कार्य की आव"यकता हैं ? इसके लिए व्यक्ति और समूह दोनों के सक्रिय सहयोग तथा सरकारी सतत प्रयासों की परम आव"यकता हैं। तभी इस अति महत्वपूर्ण, व्यावहारिक प्रकृति की समस्या का समाधान सम्भव हैं।

सेवारत f"kक्षित महिलाओं सें सम्बन्धित समस्या के निराकरण हेतु कुछ व्यावहारिक सुझाव निम्नवत् हैं।–

पुरूषों को घर की जिम्मेदारी में सहभागी बनना चाहिए। जिस प्रकार वे (महिलायें) घर से बाहर तक की जिम्मेदारी में पुरूष के साथ सहभागी बनी है, वरना घर के कामों और नौकरी का बोझ उन्हें दोहरी मार से धरा"ाायी कर देगा।

भारत जैसे विकास"ीील दे"ा में परम्परायें आसानी से नहीं टूटती। इसीलिए अधिकां"ा घरेलू महिलायें पूरी तरह पुरूषों पर आश्रित होकर रह गयी है, अतः उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दि"ाा में उठ खड़ी होने वाली समस्याआ और चुनौतियों का मुकाबला अत्यन्त सूझ–बूझ के साथ करना होगा। व्यावहारिक f"kक्षा पर वि"ोष बल प्रदान किया जाना चाहिए।

महिलाओं की आर्थिक भूमिका को सबल एंव गति"ीील करने के लिए हमें सर्वप्रथम f"kक्षा एंव प्रf"kक्षण पर पूरा ध्यान देना होगा और कन्याओं के विद्यालयों में रोजगार परक f"kक्षा की व्यवस्था के साथ – साथ तकनीकी प्रf"kक्षण के बहुसंख्यक केन्द्र खोलने होगें। दे"ा म कृषि, इंजीनियरिंग, प्र"ाासन आदि के उच्च अध्ययन केन्द्रों में छात्राओं के प्रवे"ाार्थ स्थान सुरक्षित करने होगें तथा छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करनी होगी।

महिलाओं के रोजगार के अवसर बढानें के लिए तत्काल सरकार द्वारा महिला f"kक्षण संस्थाओं में केवल महिलाओं को ही नियुक्त किया जाये क्योंकि बच्चों की देखभाल का काम वे पुरूषों की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह कर सकती हैं।

महिलाओं के लिए घरेलू उद्योगों के प्रचार–प्रसार की अधिक महत्ता स्पष्ट है इससे उनके श्रम का सदुपयोग हो सकेगा और वे अपन घरेलू कार्यों के अतिरिक्त ऐसे उद्योग लगाकर राष्ट्रीय आय मे योगदान दे सकेंगी। इसके लिए महिला व्यावायिक प्रf"kक्षण केन्द्रों की स्थापना बड़ी संख्या में करनी होगी और निर्मित वस्तुओं के विक्रय तथा तकनीकी पराम"ा एंव सहायता के लिए व्यावसायिक केन्द्र संचालित करने होंगे

परिवार के कार्यो में लगे रहने से स्त्रियों के लिए अधिक समय बाहर व्यतीत करना मुf"कल होता हैं। अतः नौकरियॉ अं"ाकालीन हो तो स्त्रियाँ अपने प्रf"kक्षण का सदुपयोग भी कर सकेगी और परिवार में अधिक सहयोगिनी बन सकेगी। व्यवसायरत महिलाओं के लिए f"k"ाुरक्षा एंव पोषण सेवा की व्यवस्था होनी आव"यक हैं।

संदर्भ–सूची

1– सांगली की रानी, ऑल इण्डिया वूमेन्स कान्फेंस 1927 पृष्ट 450

2– प्रोमिला, कपूर, मैरिज एण्ड दि वकिग वूमैन इन इण्डिया 1970
3– सर्राफ सरला, बदलती दुनिया मे नारी की स्थिति एंव भूमिकायें 1988 पृष्ट 18
4– द्विवेदी, आलोक कार्यरत विवाहित हिन्दू महिलाऐं, प्रकाि"ात शोध पत्र, सेमीनार अंक, बी.एच.यू. वाराणसी 1989
5– श्री वास्तव एच0 एस0 कामकाजी महिलाए –एक परिदृ"य प्रकाि"ात शोध पत्र समाज समीक्षा वनस्थली विद्यापीठ प्रका"ान 1986, 32
6– भारत की जनगणना 2001, प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, आगरा 2002, पृष्ट 21–23
7– वही पृ– 26
8– गौतम धर्मसूत्र 3.10.1
9– महाभारत , आदि पर्व, 74, 20
10– शतपथ ब्राह्मण 5.2.1.10 मनुस्मृति 9 4 5